इकाई 5 कृष्णा सोबती का कथा-साहित्य और 'ज़िन्दगीनामा'

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 कृष्णा सोबती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

5.3 कृष्णा सोबती का कथा-साहित्य

5.3.1 कहानी

5.3.2 लघु उपन्यास अथवा लंबी कहानियाँ

5.3.3 उपन्यास

5.4 कृष्णा सोबती का 'ज़िन्दगीनामा'

5.5 सारांश

5.6 अभ्यास प्रश्न

5.0 उद्देश्य

'हिन्दी उपन्यास-2' के खण्ड-2 के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत यह पहली इकाई है। इस इकाई में आप हिन्दी के अत्यंत प्रसिद्ध उपन्यास 'ज़िन्दगीनामा' की लेखिका कृष्णा सोबती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को पहचानते हुए उनके कथा-साहित्य पर एक विहंगम दृष्टि डालेंगे और पूरे कथा-साहित्य के संक्षिप्त परिचय के साथ-साथ उनके वृहत्काय उपन्यास 'ज़िन्दगीनामा' की संक्षिप्त रूपरेखा से परिचित होंगे। कृष्णा सोबती अविभाजित पंजाब मूल की लेखिका हैं, जिन्होंने अपने कथा-साहित्य में अविभाजित पंजाब की जीवंत संस्कृति के चित्र अपनी कथात्मक रचनाओं में बड़ी चित्रमयता से प्रस्तुत किए हैं। साथ ही दिल्ली महानगर के जीवन के विशिष्ट रूप भी उनकी कुछ रचनाओं में प्रस्तुत हुए हैं। 'ज़िन्दगीनामा' (भाग एक) में पंजाबी संस्कृति के जो खूबसूरत चित्र उभर कर सामने आए हैं, उनसे भी आप इस इकाई में परिचित हो सकेंगे। 'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास का अध्ययन आप इस इकाई के अध्ययन से पहले भी करें व बाद में भी। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप:

- कृष्णा सोबती के जीवन और रचनात्मक व्यक्तित्व के विकास को रेखांकित कर सकेंगे;
- कृष्णा सोबती के रचनात्मक व्यक्तित्व के प्रमुख रूप-कथा-लेखिका के रूप में उनकी रचनात्मक क्षमता को पहचान सकेंगे;
- एक कथा-लेखिका के विभिन्न प्रयोगों - दीर्घाकार औपन्यासिक रचना, लघु आकार औपन्यासिक रचना व कहानी के विधागत स्वरूप की विशिष्टता भी रेखांकित कर सकेंगे;
- कथा-लेखिका के रूप में पंजाबी संस्कृति और दिल्ली महानगर की संस्कृति का विशेष रूप भी उनकी रचना के केन्द्र में रख कर देख सकेंगे;
- पंजाबी संस्कृति के विशिष्ट एवं महाकाव्यात्मक स्वरूप को 'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास में जीवंत रूप में देख सकेंगे;
- पंजाबी जन-जीवन में पंजाबी स्त्री की स्थिति, उसकी सांस्कृतिक अस्मिता व उसके भावात्मक व्यक्तित्व के स्वरूप को कृष्णा सोबती की कथात्मक कृतियों के माध्यम से लक्षित कर सकेंगे; और
- कृष्णा सोबती के समस्त कथा-साहित्य की विराटता व भव्यता पर चर्चा कर सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना

'हिन्दी उपन्यास - 2' के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत कुछ अन्य उपन्यासों के साथ-साथ कृष्णा सोबती के 'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास का अध्ययन आपको करना है।

हिन्दी उपन्यास के अध्ययन के क्रम में लगभग एक सौ बीस वर्ष की हिंदी उपन्यास-यात्रा के विभिन्न पड़ावों से गुज़रते हुए आपको 1979 में प्रकाशित 'ज़िन्दगीनामा' तक पहुँचना है। दूसरे शब्दों में 'ज़िन्दगीनामा' के प्रकाशन तक हिंदी उपन्यास सौ वर्ष की यात्रा पूरी कर चुका था व अपनी परिपक्वता से भारतीय उपन्यास में तो विशिष्ट स्थान का अधिकारी बन ही चुका था, उसने एशियायी व विश्व उपन्यास में भी अपनी जगह बना ली थी। 1936 में प्रकाशित प्रेमचंद के 'गोदान' उपन्यास ने हिन्दी उपन्यास को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कर दी थीं, जिन्हें बाद के उपन्यास भी कम ही छू पाए थे। यशपाल कृत 'झूठा सच', अज्ञेय रचित 'शेखर : एक जीवनी', जैनेन्द्र कुमार रचित 'त्याग पत्र', अमृतलाल नागर रचित 'बूँद और समुद्र' व फणीश्वरनाथ रेणु कृत 'मैला आँचल' से हिंदी उपन्यास जिन कलात्मक उँचाइयों तक पहुँच चुका था, उसके बाद 1967 में श्रीलाल शुक्ल रचित 'राग दरबारी' जैसे उपन्यास ही कई ज़मीन तोड़ पाए थे। इस सन्दर्भ में देखें तो 1979 में कृष्णा सोबती ने 'ज़िन्दगीनामा' के माध्यम से एक जीवंत संस्कृति के समूचे रूप के संश्लिष्ट चित्रण द्वारा हिंदी उपन्यास को फिर एक विशिष्ट औपन्यासिक रचना प्रदान की, जो पिछले दो दशक से भी अधिक समय से हिंदी व अनुवाद द्वारा हिंदीतर पाठकों के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है।

'ज़िन्दगीनामा' के प्रकाशन से पूर्व ही कृष्णा सोबती हिंदी की अत्यंत प्रतिष्ठित कथा-लेखिका के रूप में स्थान ग्रहण कर चुकी थीं। उनकी कुछ कृतियाँ चर्चित व बहुचर्चित हो चुकी थीं, कुछ विवाद भी उनकी रचनाओं को लेकर उठ चुके थे। आज भी कृष्णा सोबती के लेखन पर कभी-न-कभी कुछ विवाद उठते ही रहे हैं, जो उनकी रचना की शक्ति को ही इंगित करते हैं। प्रस्तुत इकाई में कृष्णा सोबती के रचनात्मक व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का परिचय प्राप्त करने के साथ-साथ 'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास की संक्षिप्त विषयवस्तु का अध्ययन भी आप करेंगे।

5.2 कृष्णा सोबती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

कृष्णा सोबती का जन्म विभाजन-पूर्व पंजाब के ज़िला गुजरात (अब पाकिस्तान में) में 18 फरवरी 1925 को हुआ। उनकी शिक्षा-दीक्षा लाहौर, शिमला व दिल्ली में हुई। दिल्ली में ही कुछ समय उन्होंने नौकरी भी की, लेकिन पिछले काफी अर्से से वे पूरा समय अपने सृजनात्मक लेखन को दे रही हैं। 1980 से 1982 तक वे पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला की फेलो रही हैं और हाल के वर्षों में वे भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला की 'राष्ट्रीय फेलो' भी रही हैं, जहाँ उन्होंने गंभीर अध्ययन किया है।

कृष्णा सोबती का रचनात्मक जीवन 16-17 वर्ष की किशोरावस्था से ही शुरू हो गया था। 'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह में संकलित 24 कहानियों में से कुछ का रचनाकाल सन् 1944 यानि 19 वर्ष की आयु से दर्ज है। उन्होंने अपने रचनात्मक जीवन की शुरुआत काव्य-रचना से की थी, लेकिन अपनी किशोरावस्था में रची कविताएँ कृष्णा सोबती ने छपवाई नहीं। सिर्फ अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी काव्य-रचना कहानी-रचना से दो-तीन वर्ष पहले शुरू हो चुकी होगी। अत: कृष्णा सोबती अपने जीवन के यदि सात दशक पार की चुकी हैं तो अपने सृजनात्मक जीवन के भी लगभग पाँच दशक पूरे कर चुकी हैं। कृष्णा सोबती का पूरा जीवन एक तरह से सृजन का ही जीवन है। जीवन का अधिकांश उन्होंने अकेले जिया है,

लेकिन उनका व्यक्तित्व बहुत ही जीवंत व सामाजिक जीवन में घुलने मिलने वाला है। लेखक होने के बड़प्पन के झूठे 'अहं' से यद्यपि वे पूरी तरह मुक्त हैं, तथापि लेखक के आत्मसम्मान के प्रति वे पूर्णतया सजग हैं, जिसके चलते कई सरकारों द्वारा अपमानजनक ढंग से दिए गए पुरस्कारों को वे ठुकरा भी चुकी हैं। 'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास पर वे साहित्य अकादमी के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार से 1980 में पुरस्कृत हो चुकी हैं और पंजाब सरकार द्वारा उन्हें 1981 का 'साहित्य शिरोमणि' पुरस्कार भी दिया जा चुका है। दिल्ली व मध्य प्रदेश सरकारों के कुछ पुरस्कारों को उन्होंने स्वीकार किया तो दिल्ली सरकार द्वारा ही घोषित अन्य पुरस्कार वे ठुकरा भी चुकी हैं। अपने लेखकीय आत्म सम्मान व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा में भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला की कार्यसमिति के अध्यक्ष को भी उन्होंने पत्र लिखकर अपना विरोध दर्ज कराया था।

कृष्णा सोबती की अनेक रचनाओं का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है। 'ज़िन्दगीनामा' का पंजाबी अनुवाद ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता पंजाबी उपन्यासकार गुरदयाल सिंह ने किया, जो पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला द्वारा प्रकाशित किया गया। 'मित्रो मरजानी' का पंजाबी अनुवाद भी हुआ है। 'ऐ लड़की' का अंग्रेजी अनुवाद शिवनाथ ने किया है।

कृष्णा सोबती की अब तक प्रकाशित रचनाओं की सूची इस प्रकार है :

1.	हम हशमत (एक) संस्मरण/रेखाचित्र	प्र.सं. 1977
2.	हम हशमत (दो) संस्मरण/रेखाचित्र	प्र.सं. 1999
3.	बादलों के घेरे (कहानी संग्रह)	प्र.सं. 1980
4.	डार से बिछुड़ी (उपन्यास)	प्र.सं. 1958
5.	मित्रो मरजानी	प्र.सं. 1967
6.	यारों के यार/तिन पहाड़ (लघु उपन्यास)	प्र.सं. 1968
7.	सूरजमुखी अंधेरे के (उपन्यास)	प्र.सं. 1972
8.	जिन्दगीनामा (उपन्यास)	प्र.सं. 1979
9.	ऐ लड़की (उपन्यासिका)	प्र.सं. 1991
10.	दिलो-दानिश (उपन्यास)	प्र.सं. 1993
11.	समय सरगम (उपन्यास)	प्र.सं. 2000
12.	ज़िन्दगीनामा (भाग दो) कुछ अंश बहुवचन-1	प्र.सं. 1999
13.	फोन बजता रहा : समकालीन भारतीय साहित्य	प्र.सं. 2001

प्रकाशन की दृष्टि से 'डार से बिछुड़ी' उपन्यासिका उनकी सर्वप्रथम प्रकाशित रचना है। लेकिन 'बादलों के घेरे' (कहानी संग्रह) उनके रचनाकर्म का प्रथम पड़ाव है। इसमें संकलित 24 कहानियाँ उनके रचनात्मक जीवन के पहले दौर को रेखांकित करती हैं, जिनकी रचना 1944 से 1959 के पन्द्रह वर्षों के बीच हुई। वास्तव में कहानी और उपन्यास की रचना विधा भी कृष्णा सोबती के सृजनात्मक तनाव का एक बिंदु रहा है। 'मित्रो मरजानी', ऐ लड़की', 'यारों के यार' या 'तिन पहाड़' आदि रचनाएँ पहले पत्रिकाओं में कहानी या लंबी कहानी रूप में प्रकाशित हुई, बाद में पुस्तकाकार रूप में, उपन्यास रूप में विज्ञापित-प्रचारित हुईं, व उसी रूप में बाद में इनकी गणना चर्चा भी होने लगी। 'यारों के यार' और 'तिन पहाड़' दो अलग रचनाएँ हैं, लेकिन एक ही जिल्द में होने से कई बार एक ही रचना का भ्रम देती हैं। 'मित्रो मरजानी', 'डार से बिछुड़ी' व ऐ लड़की' के नाट्य रूपांतर भी हुए हैं, जो बड़ी सफलता से मंचित भी हुए हैं।

'हम हशमत' (भाग एक व दो) में संकलित रचनाएँ संस्मरण और रेखाचित्र विधा या दोनों विधाओं का मिलाजुला रूप प्रस्तुत करने वाली रचनाएँ हैं।

'सोबती : एक सोहबत' संकलन में कृष्णा सोबती की रचनाओं में से चुनिन्दा अंशों का संकलन किया गया है।

'ज़िन्दगीनामा' के परिचय से पहले कृष्णा सोबती की अन्य रचनाओं से आपका संक्षिप्त परिचय उनके रचनात्मक व्यक्तित्व को समझने के लिए उपयोगी हो सकता है।

कृष्णा सोबती की हिंदी साहित्य-क्षेत्र में मुख्य प्रतिष्ठा यद्यपि एक सशक्त उपन्यासकार के रूप में स्थापित हुई है, तथापि कहानी व संस्मरण/रेखाचित्र विधाओं में भी उनका कृतित्व अत्यंत चर्चित हुआ है। रेखाचित्रों/संस्मरणों की अपनी प्रथम रचना 'हम हशमत' (एक) में कृष्णा सोबती ने 21 व्यक्तित्वों, जिनमें अधिकांश हिंदी लेखक ही हैं, के संस्मरण व व्यक्ति चित्र प्रस्तुत किए हैं। 1977 में पहली बार प्रकाशित इन संस्मरणात्मक चित्रों में निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, नागार्जुन, महेन्द्र भल्ला, मनोहर श्याम जोशी, गोविन्द मिश्र आदि प्रतिष्ठित हिंदी लेखकों के व्यक्ति-चित्र शामिल हैं। लेकिन इनके साथ-साथ मियाँ नसीरुद्दीन, सरदार जग्गा सिंह आदि साधारण मगर विशिष्ट व्यक्ति-चित्र भी लेखिका ने शामिल किए हैं। शैली के स्तर पर इन व्यक्ति चित्रों के रिपोर्टर रूप में लेखिका स्वयं उपस्थित हैं। 1985 में प्रकाशित इस पुस्तक के दूसरे संस्करण में लेखिक ने तीन-चार संस्मरण और शामिल किए हैं, जिनमें 1982 में रचा बाबा नागार्जुन का व्यक्ति-चित्र अत्यंत मर्मस्पर्शी है। लेखिका का अपना व्यक्ति-चित्र भी काफी प्रभावशाली है। इन संस्मरणों में कई दृश्य-चित्र साहित्यिक पार्टियों के हैं, जिनमें कई-कई लेखकों के व्यक्ति-चित्र एक साथ उभरे हैं। कृष्ण बलदेव वैद का रेखाचित्र भी इसी संकलन में शामिल हैं। लेखिका की घनिष्ठ मित्र व बड़ी प्रकाशकीय हस्ती शीला संधू भी यहाँ मौजूद हैं।

हम हशमत (एक) के बाईस वर्ष बाद 1999 में कृष्णा सोबती ने 'हम हशमत' (दो) शीर्षक से 337 पृष्ठों का बड़ा संकलन प्रस्तुत किया। इस संकलन में हिंदी, उर्दू व गुजराती आदि भाषाओं के 19 लेखकों के संस्मरणात्मक रेखाचित्र प्रस्तुत हैं। 'हम हशमत' (दो) के रेखाचित्र प्रथम संकलन की अपेक्षा अधिक विस्तार और गहराई लिए हुए हैं, इसलिए आकार में भी लंबे हैं।

इन संस्मरणों में 48 पृष्ठ का नामवर सिंह का संस्मरणात्मक व्यक्ति-चित्र है, जो है भी संग्रह का प्रथम चित्र। जाहिर है कि लेखिका ने नामवर सिंह को संकलन प्रकाशित होते समय हिंदी के सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यक्तियों में एक का दर्जा दिया है। नामवर सिंह के बाद 38 पृष्ठों का अशोक वाजपेयी का रेखाचित्र है, जिसे उसी मनोयोग से लेखिका ने रचा है। सबसे छोटा रेखाचित्र चार पृष्ठ का बलवंत सिंह का है, लेकिन पृष्ठ कम होने पर भी लेखिका के मन में बलवंत सिंह का स्थान या सम्मान कम नहीं है। वे उन्हें अत्यंत महत्वपूर्ण लेखक के रूप में याद करती हैं। अन्य लेखकों में भैरो और राजेन्द्र सिंह बेदी भी उपस्थित हैं तथा अज्ञेय, श्रीकांत वर्मा व उपेन्द्रनाथ अश्क भी। इसके अन्तर्गत कमलेश्वर, प्रयाग शुक्ल, नासिरा शर्मा व लेखक मित्र जोड़ियों - सत्येन कुमार और मंजूर एहतेशाम व सौमित्र मोहन-स्वदेश दीपक को भी स्थान मिला है। गुजराती के वरिष्ठ लेखक उमाशंकर जोशी (स्वर्गीय) पर भी लेखिका ने मनोयोग से लिखा है। शीला संधू के साथ ही अन्य प्रकाशक यहाँ प्रस्तुत हैं - अरविंद कुमार, जो राधाकृष्ण प्रकाशन छोड़कर नेशनल बुक ट्रस्ट के निदेशक बने थे और अब बच्चों के साहित्य के प्रकाशन के क्षेत्र में बड़ी अंतर्राष्ट्रीय हस्ती बन गए हैं।

'हम हशमत' के दोनों भागों में कृष्णा सोबती का पंजाब व पंजाबियत प्रेम भी अभिव्यक्त हुआ है। भीष्म साहनी, कृष्ण बलदेव वैद, भैरो, अश्क, बेदी, बलवंत सिंह, स्वदेश दीपक, शीला संधू, महेन्द्र भल्ला आदि पंजाबी पृष्ठभूमि के लेखक हैं, जो लेखिका को प्रिय रहे हैं। कुल मिलाकर कृष्णा सोबती ने 'हम हशमत' के दोनों भागों व समकालीन भारतीय साहित्य में अंग्रेज़ी विद्वान डॉ. जयदेव (स्वर्गीय) से सम्बद्ध संस्मरणों द्वारा सफलता प्राप्त की है।

5.3 कृष्णा सोबती का कथा-साहित्य

5.3.1 कहानी

'बादलों के घेरे' (कहानी संग्रह)

कृष्णा सोबती के अब तक प्रकाशित एकमात्र कहानी संग्रह 'बादलों के घेरे' का सर्वप्रथम प्रकाशन 1980 में हुआ। इस संग्रह के प्रकाशन से ही यह स्पष्ट हुआ कि यद्यपि कृष्णा सोबती की ख्याति एक उपन्यासकार के रूप में हुई लेकिन उनके सृजनात्मक लेखन का पहला दौर कहानी रचना से शुरू हुआ। 'बादल के घेरे' संग्रह में लेखिका की 24 छोटी-बड़ी कहानियाँ संकलित हैं, जिनका रचनाकाल 1944 से 1959 के 15-16 वर्षों में फैला है। संभव है कि इनमें से कुछ रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में पहले प्रकाशित हुई हों और कुछ रचनाएँ अप्रकाशित रही हो सकती हैं। इन रचनाओं में दो पृष्ठ की लघु कहानी से लेकर 21 पृष्ठ की सबसे लंबी कहानी 'बादलों के घेरे' तक शामिल है। संग्रह की सबसे छोटी कहानी 'नफीसा' कालक्रम की दृष्टि से कृष्णा सोबती की सबसे पहली कहानी है, जो जनवरी 1944 में या तो लिखी गई या प्रकाशित हुई। लेखिका ने कहानियों के अंत में वर्ष का उल्लेख किया है, संभवत: यह लेखन वर्ष है, न कि प्रकाशन वर्ष। मई 1944 की 'लामा' कहानी तीन पृष्ठ की है। दोनों ही कहानियाँ बाल मन की संवेदनशीलता की कहानियाँ हैं। 'नफीसा' एक मरती हुई बच्ची की दर्दनाक व्यथा की लघु रचना है तो 'लामा' के बच्चों में अभी तक मृत्युबोध भी उत्पन्न नहीं हुआ है, जो लामा की मृत्यु से प्रसन्न हो रहे हैं कि वह उन्हें दोबारा मिलेगा। यह दिलचस्प है कि कृष्णा सोबती ने 19 वर्ष की आयु में बच्चों को अपनी कहानियों के केन्द्र में रखा है। इस संग्रह की कई कहानियों के केन्द्र में हैं - 'मेरी माँ कहाँ' (1949), 'दादी अम्मा' (1954) 'टीलों ही टीलों' (1954) आदि।

'बादलों के घेरे' कहानी संग्रह की दो कहानियाँ अत्यधिक चर्चित कहानियाँ हैं। संग्रह के शीर्षक से सम्बद्ध कहानी 'बादलों के घेरे' 1955 में रची गई। जिन दिनों यह कहानी लिखी गई, उन दिनों टी.बी. या यक्ष्मा का रोग भी काफी व्यापक और असाध्य माना जाता था हिंदी के कई लेखकों ने इस रोग को केन्द्र में रखकर कहानियाँ भी लिखीं। 'बादलों के घेरे' का नायक सेनेटोरियम में दाखिल है। वह मृत्यु के अवसाद में घिरा अपनी पूर्व प्रेमिका को याद करता है, जो यक्ष्मा से ही मृत्यु को प्राप्त हुई थी। उसके प्रति वह चाहकर भी अपनी संवेदना व्यक्त न कर पाया था। अपने कथ्य में लेखिका की यह बहुत मार्मिक कहानी है। संभवत: 'बादलों के घेरे' कहानी लेखिका की भविष्य की औपन्यासिकाओं या लंबी कहानियों की रचना का पूर्वाभ्यास भी कही जा सकती है। लेखिका लगातार छोटी कहानियों से लंबी कहानियों के लेखन की ओर अग्रसर हुई हैं। बाद में तो उन्होंने छोटी कहानी लिखना छोड़ ही दिया। संस्मरण/रेखाचित्र विधा में भी वे लघु आकार से दीर्घाकार रचना की ओर गई हैं। यद्यपि यह सही है कि उनका रचना का दीर्घाकार अर्थहीन आकार विस्तार न होकर रचना की आंतरिक ज़रूरत से पैदा हुआ है।

जुलाई 1949 में रचित 'सिक्का बदल गया' कहानी हिंदी में इतनी अधिक चर्चित रही है (और है) कि विभाजन-आधारित कहानियों के एक संकलन का शीर्षक ही इसे बना लिया गया है। कुल सात पृष्ठ की यह अत्यंत मर्मस्पर्शी कहानी है, जिसमें विभाजनपूर्व पंजाब के एक गाँव की शाहनी भाजन के सांप्रदायिक तनाव के दिनों में अपनी पूरी संपत्ति छोड़ कर खाली हाथ ट्रक पर भारतीय पंजाब की ओर रवाना हो जाती है और पूरा गाँव शाहनी के साथ अपने पचास साल के लंबे संबंधों की मधुरता को याद कर दु:खी हो रहा है। विभाजन के दिनों के मानवीय दर्द की यह इतनी सशक्त आरंभिक दौर की कहानी है कि संभवत: उसी समय कृष्णा सोबती हिंदी की एक महत्वपूर्ण कथा लेखिका के रूप में प्रतिष्ठित हो गई होंगी।

'बादलों के घेरे' कृष्णा सोबती का यद्यपि एकमात्र प्रकाशित कहानी संग्रह है, लेकिन कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से इस संग्रह को हिंदी कहानी के विकास में एक महत्वपूर्ण संग्रह का स्थान हासिल हुआ है। 'बादलों के घेरे' संग्रह की रचना के क्रम में कृष्णा सोबती के भविष्य के उपन्यासकार व्यक्तित्व का निर्माण भी होता चला गया है। 'बादलों के घेरे' की कहानियाँ एक स्तर पर एक बड़े कथा-लेखक के विकास की संभावनाओं को उजागर करने वाली कहानियाँ हैं, जिन्हें हिंदी कहानी में उचित महत्व प्राप्त हुआ है।

5.3.2 लघु उपन्यास अथवा लंबी कहानियाँ

'डार से बिछुड़ी'

कृष्णा सोबती का यह प्रथम लघु उपन्यास पहली बार 1958 में प्रकाशित हुआ। पेपरबैक संस्करण के करीब 110 पृष्ठ के आकार के 17 छोटे अध्यायों वाले इस उपन्यास में लेखिका ने एक अभागी पंजाबी स्त्री पाशो की व्यथा-कथा कही है। उसकी माँ हिंदू सर्राफों की बेटी थी, जिसने उसी कस्बे में मुसलमान शेखों के यहाँ मर्जी से विवाह किया, परिणामत: दोनों परिवारों में दुश्मनी हो गयी। पाशों को उसके मामाओं व नाना ने पाला, मगर एक मुस्लिम लड़के से संबंध के शक में मार दिए जाने के षड्यंत्र का आभास मिलते ही पाशो अपनी माँ मेहर के यहाँ शरण लेती है, जहाँ शेख उसे एक बड़ी उम्र के हिंदू मित्र दीवान लखपत से ब्याह देते हैं, जो काफी दूरी पर बसा है। इससे दोनों परिवारों की कटुता तो कम होती है, लेकिन पाशो का जीवन दुखांत के लंबे दौर से गुजरता है। दीवान लखपत तो उसे एक बेटा देकर चल बसता है, लेकिन उसके बाद तो उसका हश्र बाज़ार में बिकने वाली पण्य वस्तु जैसा है, जिसे कभी कोई खरीद लेता है, कभी कोई। यह काल खालसा राज की समाप्ति व अंग्रेजी अमलदारी की स्थापना का है। लंबे दु:खों के बाद पाशो का भाई उसका उद्धार कर 'डार से बिछुड़ी' को डार से मिलाता है।

कृष्णा सोबती की इस प्रथम प्रकाशित औपन्यासिक रचना ने ही हिन्दी उपन्यास में उन्हें प्रतिष्ठा दिली दी। भारतीय समाज में स्त्री की वास्तविक स्थिति, सामंती मूल्यों के वर्चस्व तले दबी कुचली नारी की व्यथा-कथा को उन्होंने अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

'मित्रो मरजानी'

'डार से बिछुड़ी' के प्रकाशन के नौ वर्ष बाद 'मित्रो मरजानी' छपा। इस उपन्यास के संबंध मे भी यही कहा गया है कि 'ऐ लड़की' की तरह पहले यह लंबी कहानी रूप में पत्रिका में छपा, लेकिन इसका पुस्तकाकार रूप उपन्यास रूप में घोषित-प्रकाशित हुआ। अब तो 'मित्रो मरजानी' की चर्चा प्राय: उपन्यास रूप में ही होती है। 'वर्तमान साहित्य' पत्रिका के शती कथा-विशेषांक में बीसवीं सदी के दस बेहतरीन हिन्दी उपन्यासों में इस उपन्यास को शामिल किया गया है। 1967 में प्रकाशित इस उपन्यास में कस्बाई जीवन के व्यापारी पंजाबी जीवन का घरेलू चित्र अंकित हुआ है, जहाँ मित्रो या सुमित्रावंती अपनी शारीरिक कामना की भूख पति द्वारा संतुष्ट न किए जाने पर दु:खी रहती है। डॉ. गुरुदास व धनवंती के तीन बेटे व एक बेटी हैं। सभी ब्याहे हैं। बड़ा बेटा बनवारी अपनी पत्नी सुहागवंती से खुश है। मंझला पुत्र सरदारी सुमित्रावंती यानि मित्रो का पति है और युवा होकर भी शारीरिक सुख में रुचि नहीं लेता। तीसरा पुत्र गुलज़ारी अपनी पत्नी फूलवंती के वशीभूत है व घर में कलह का कारण भी। बेटी उनकी सबसे पहले माँ बनती है। मित्रो नूरमहल की उस मां की बेटी है, जिसने सौ-सौ मर्दों का साथ किया है और जो मित्रो को भी उसी रास्ते पर ले जाने पर तत्पर है, लेकिन मित्रो अपनी सारी खुली सेक्स चर्चा के बावजूद पति को ही अपनी कामना पूर्ति के रास्ते पर ले आती है।

यह कहानी अपनी बोल्ड' थीम के कारण खूब चर्चित रही है और स्त्री-पुरुष सेक्स समस्या पर इतने खुले, मगर स्वस्थ ढंग से लिखी गई कुछ चुनी हुई रचनाओं में से एक है।

'यारों के यार'/'तिन पहाड़'

प्रकाशन क्रम में अगली पुस्तकाकार रचना 'यारों के यार'/'तिन पहाड़' है, जो वास्तव में दो रचनाएँ हैं, जो एक ही जिल्द में संकलित हैं। इन्हें दो लंबी कहानियाँ भी कहा जा सकता है और उपन्यासिकाएँ भी। अब तो इन्हें उपन्यासिका ही माना जा रहा है। दोनों ही रचनाएँ 60-65 पृष्ठों के लघु आकार की हैं।

'यारों के यार' में दिल्ली के सरकारी दफ्तरों के भीतरी सड़े हुए माहौल को केन्द्र में रखा गया है, जो विशेषत: क्लर्क मानसिकता द्वारा मनुष्य के मानवीय बोध के नष्ट होने की दु:खद कथा का बयान है, जहाँ एक पिता अपने बच्चे की मृत्यु पर दफ्तर से एक दिन का भी अवकाश नहीं लेता। यहाँ सभी भ्रष्टाचार में लिप्त हैं और गालियाँ बकते हैं।

'तिन पहाड़' बिल्कुल भिन्न प्रकार की अत्यंत संवेदनशील दु:खांत प्रेम कहानी है। कंचनजंघा की दार्जिलिंग क्षेत्र की पहाड़ियों में जया-श्री-एडना के प्रेम-त्रिकोण और जया के दु:खद आत्मघात को केन्द्र बनाकर यह उपन्यास लिखा गया है। तपन भी जया की ओर आकर्षित हुआ था, लेकिन जया श्री की बेवफाई से उबर नहीं पाती। यह कहानी प्रेम संबंधों की मानवीयता की अत्यंत मार्मिक कहानी है।

'ऐ लड़की'

प्रकाशन क्रम में 1991 में पहली बार 'वर्तमान साहित्य' के कहानी महाविशेषांक में प्रकाशित, बहुचर्चित तथा बाद में उपन्यास रूप में विज्ञापित-प्रकाशित 'ऐ लड़की' भी एक अभिनव रचना है। कृष्णा सोबती की हर रचना एक नई मानवीय स्थिति को अभिव्यक्त करने वाली सशक्त रचना होती है। वे कहीं भी स्वयं को कथ्य या शिल्प के स्तर पर दोहराती नहीं। 'ऐ लड़की' में मर रही माँ और उसकी अकेली रह रही लड़की के संवाद, विशेषत: माँ के एकालाप पर आधारित कहानी है, जिसमें पंजाबी परिवारों के भीतर की सांस्कृतिक झलक भी मिलती है। माँ इसका अत्यंत सशक्त चरित्र है, जो जीवन का लुत्फ उठाने में विश्वास रखता है, जीवन को उत्सव की तरह जीने, न कि हर समय अवसादों में घिरे रहने को। 'ऐ लड़की' भी लंबे अर्से तक चर्चा के केन्द्र में रही रचना है।

5.3.3 उपन्यास

'सूरजमुखी अंधेरे के' (1972)

1972 में कृष्णा सोबती का करीब 127 पृष्ठ का उपन्यास 'सूरजमुखी अंधेरे के' प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास ने भी कथ्य की विशिष्टता के कारण पाठकों व विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया। यह एक ऐसी स्त्री की दर्दनाक कहानी है, जिसके व्यक्तित्व में बचपन की यौनहिंसा ने असुरक्षा व कुछ हद तक निस्संगता भी दी है। रति अपने व्यक्तित्व, अपने आत्मसम्मान के प्रति अतिशय संवदेनशील हो जाती है। उच्च मध्यवर्ग की यह लड़की कहीं भी सामान्य संबंध नहीं बना पाती। किशोरावस्था या युवावस्था का प्रथम मित्र असद अचानक चल बसता है। अंतत: विवाहित पुरुष दिवाकर के साथ रति अपना शरीर सुखभोग कर संतुष्ट होती है। स्त्री-पुरुष रति का ऐसा विस्तृत लेकिन नियंत्रित चित्रण हिन्दी उपन्यास में दुर्लभ है। बावजूद इसके अकेलापन रति की नियति बन गया है।

'सूजरमुखी अंधेरे के' अपने कथ्य और शिल्प दोनों में ही अभिनव प्रयास है। (1979 में प्रकाशित 'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास की चर्चा विस्तार से अंत में की जाएगी)।

'दिलो दानिश' (1993)

करीब दो सौ पृष्ठ का कृष्णा सोबती रचित 'दिलो दानिश' उपन्यास 1993 में प्रकाशित हुआ। छपते ही इस उपन्यास पर हिन्दी और अंग्रेजी में अनेक साहित्य समीक्षकों ने लेख लिखे।

उपन्यास पाठकों में भी अत्यंत लोकप्रिय हुआ। इसका प्रमाण है कि एक ही साल में इसका प्रथम संस्करण समाप्त हो गया।

इस उपन्यास में लेखिका ने पुरानी दिल्ली की सामाजिक संस्कृति को केन्द्र में रखा है और वकील कृपानारायण के 'घर' और 'बाहर' की कहानी कही है। दिल्ली के सफल वकील के घर की बड़ी हवेली में एक ओर पत्नी कुटुंबप्यारी और बच्चे हैं तो दूसरी ओर एक मुकदमें के सिलसिले में आई महक बानो की माँ उन्हें महक बानो ही सौंप देती है, जिसकी जेवरों की संदूकची भी वकील साहिब सँभाल लेते हैं। वे महक बानो को फराशखाने में एक घर में रखते हैं और वहाँ भी उनके दो बच्चे मासूमा व बदरू हो जाते हैं। वकील के बेटे राजो भाई की सालगिरह पर पहली बार मासूमा व बदरू भी हवेली में आते हैं। 20 अध्यायों में बँटा कृष्णा सोबती का यह अत्यंत रोचक व औपन्यासिक कौशल की दृष्टि से सुगठित उपन्यास है। उपन्यास में बाद में धीरे-धीरे महक बानो अपने हकों के प्रति सचेत होती है और अपने ज़ेवर भी वापिस लेती है। वह वकील कृपानारायण की रखैल के दर्जे से भी मुक्त होती है और बेटी मासूमा की शादी में भी शान से शरीक होती हैं उपन्यास का अंत वकील कृपानारायण के देहांत और उनकी वसीयत के साथ होता है, जिसमें अपनी लंबी-चौड़ी जायदाद में उन्होंने महक बानो और उसके बच्चों के लिए भी कुछ व्यवस्था की है, जबकि जायदाद का अधिकांश भाग कानूनी विवाह की संतानों में ही बाँटा गया है।

'दिलो दानिश' उपन्यास में विभाजनपूर्ण दिल्ली का ही चित्र है, जिसमें अभी सांप्रदायिकता ने अपना रंग नहीं दिखाया है। यहाँ हिंदू-मुस्लिम संबंधों में शोषण का अंश भले ही हो, कटुता नहीं है। उपन्यास में सामाजिक यथार्थ के अनेक स्तरों को बड़े कलात्मक कौशल से उजागर किया गया है। यह अत्यंत प्रभावी रचना बन गई है।

'समय सरगम' (2000)

'समय सरगम' उपन्यास को कृष्णा सोबती ने '1999 की अंतिम व 2000 की प्रथम कृति' कहा है। करीब डेढ़ सौ पृष्ठ के इस उपन्यास के वर्ष 2000 में ही दो संस्करण निकल गए, जिससे उपन्यास की लोकप्रियता का अनुमान लगाया जा सकता है। हमेशा की तरह इस उपन्यास में भी लेखिका ने बिल्कुल भिन्न प्रकार के विषय को प्रस्तुत किया है। संभवत: हिन्दी में तो क्या, पूरे भारतीय उपन्यास में ही ऐसा विषय पहली बार प्रस्तुत हुआ है।

इक्कीस अध्यायों में बँटे इस उपन्यास का कथ्य जीवन के सफर में अकेले चलते जाने वाले दो वरिष्ठ नागरिकों की अत्यंत संवेदनशील व मानवीय प्रेमकथा पर आधारित है। शिल्प के स्तर पर एक कलाकृति के रूप में इस उपन्यास में अछूतेपन, ताज़गी और विशिष्ट भाषाई रचाव का स्पर्श मिलता है।

उपन्यास में 'अरण्या' को एक सपने के माध्यम से जीवन के प्रति आत्ममंथन का अवसर मिलता है। उपन्यास के दूसरे चरित्र 'ईशान' हैं, जो सफल गृहस्थ जीवन जीकर भी एकमात्र बेटे और पत्नी की मृत्यु के कारण जीवन के अंतिम पड़ाव में अरण्या की तरह ही अकेले हो गए हैं। अरण्या ने तो गृहस्थ जीवन का रास्ता चुना ही नहीं था। दोनों के स्वभाव और जीवन शैली में ज़मीन-आसमान का अंतर है लेकिन दोनों ही बेहद संवेदनशील और ईमानदार इंसान हैं। एक दमनकारी समाज के दबाव उन्हें धीरे-धीरे एक दूसरे के करीब ले आते हैं और वे जीवन के अंतिम पड़ाव की यात्रा में हमसफर बन कर जीने लगते हैं।

'यही धरती' शीर्षक परिशिष्ट में ईशान के साले की जर्मन पत्नी एंग्लिका, अरण्या को ईशान के भारतीय प्रशासनिक सेवा में चुने जाने के बावजूद उसे डाक सेवा में भेजे जाने की चर्चा है और साथ ही एक ओर अंतरिक्ष में बस्तियाँ बनाने की योजनाओं की बातें है, तो दूसरी ओर धरती पर निर्धनों की बढ़ती कतारें हैं। उपन्यास का अंत मनुष्य की जीत की कामना व परमाणु हथियारों के विरोध के स्वर से होता है। कृष्णा सोबती की यह रचना भी अनूठी और सशक्त है।

'ज़िन्दगीनामा' (भाग दो) 'फोन बजता रहा'

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की पत्रिका 'बहुवचन' के 1999 में प्रकाशित प्रवेशांक में कृष्णा सोबती में बहु-प्रतीक्षिक उपन्यास-'ज़िन्दगीनामा' (भाग दो) का एक अंश (करीब पचास पृष्ठ) छपा है, जिसमें 'ज़िन्दगीनामा' (भाग एक) की कथा आगे बढ़ती है। यह रचना भी भाग एक की तरह ही रोचक है और आगे की कथा के लिए जिज्ञासा पैदा करती है। कृष्णा सोबती ने शायद कहीं कहा है कि उन्होंने 'ज़िन्दगीनामा' (भाग दो) बहुत पहले पूरा कर लिया है, लेकिन अभी प्रकाशन के लिए नहीं दिया। यदि ऐसा है तो उम्मीद करनी चाहिए कि नई सदी में कृष्णा सोबती की प्रथम औपन्यासिक कृति 'ज़िन्दगीनामा' (भाग दो) ही सामने आएगी। खुद लेखिका की दृष्टि में 'ज़िन्दगीनामा' ही उनकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना या 'मैग्नस ओपम' (Magnus Opum) है।

नई सदी के प्रथम वर्ष में कृष्णा सोबती की कलम से अत्यंत संवेदनशील व भारतीय साहित्य के गहन अध्येता जयदेव को उनके असमय निधन के बाद याद किया गया है। डॉ. जयदेव हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर थे व हाल के वर्षों में उन्होंने भारतीय साहित्य, जिसमें अधिकांश हिन्दी का ही साहित्य था, का अत्यंत गहराई से अध्ययन किया था। उनका सितम्बर, 2000 में कैंसर से असमय निधन हो गया था और यह विडंबना ही थी कि पूरे देश में उनके अनेक मित्र व प्रशंसक थे, लेकिन उनके व्यक्तित्व को मार्मिक श्रद्धांजलि कृष्णा सोबती ने ही 'समकालीन भारतीय साहित्य' (मई-जून, 2001 अंक 95) में प्रकाशित संस्मरण 'फोन बजता रहा' द्वारा दी। जयदेव ने हिन्दी के जिन लेखकों को अध्ययन का केन्द्र बनाया, उनमें भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, जगदीश चन्द्र, निर्मल वर्मा, कृष्ण बलदेव वैद, मृदुला गर्ग, मोहन राकेश आदि शामिल थे। महाश्वेता देवी के अध्ययन में उनकी विशेष रुचि रही। लिखा उन्होंने इन सभी लेखकों पर अंग्रेजी भाषा में।

5.4 कृष्णा सोबती का 'ज़िन्दगीनामा'

कृष्णा सोबती के जीवन, रचना व विशेषत: कथा-साहित्य के परिचय से आपको यह आभास हो गया होगा कि वे हिन्दी की एक महान् उपन्यास लेखिका हैं। उनकी अब तक प्रकाशित सभी रचनाओं में 'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास आकार में भी अन्य सभी रचनाओं से बड़ा है और महत्व में भी। एक तरह से 1979 में प्रकाशित इस उपन्यास को लेखिका का मैग्नस ओपम (Magnus Opum) भी कह सकते हैं। साढ़े तीन सौ पृष्ठों से भी अधिक आकार की इस बृहत्तम रचना का पहला भाग 'ज़िंदा रुख' ही प्रकाशित हुआ है। जबकि उपन्यास के दूसरे भाग का एक अंश मात्र 'बहुवचन' पत्रिका के प्रवेशांक में लगभग बीस वर्षों बाद 1999 छपा है। इससे अब यह उम्मीद बँध गई है कि 'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास का दूसरा भाग, पहले भाग के छपने के दो दशक से भी अधिक अंतराल के बाद प्रकाशित रूप में पाठकों को उपलब्ध हो सकेगा।

'ज़िन्दगीनामा' कृष्णा सोबती का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपन्यास है, यह उपन्यास बीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यास साहित्य की भी बड़ी उपलब्धि है। 'ज़िन्दगीनामा' में विभाजनपूर्व पंजाब के जन-जीवन और संस्कृति का ऐसा अद्भुत पुन:सृजन किया गया है, जिसे पढ़ते हुए पाठक अभिभूत हो जाता है।

'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास दसवें व अंतिम सिख गुरु - गुरु गोविन्द सिंह के सुप्रसिद्ध फारसी कथन 'चूँ कार अज हमां हीलते दरगुज़श्त। हलालस्त बुर्दन ब-शमशीर दस्त' (जब दूसरे सब रास्ते कारगर न हो सकें तो जुल्म के खिलाफ तलवार उठा लेना ज़ायज़ है) को समर्पित है। उपन्यास का अंत भी उपन्यास के प्रमुख चरित्र शाह जी द्वारा इन्हीं पंक्तियों के उद्धरण से होता है। उपन्यास के आरंभ व अंत दोनों जगह गुरु गोविन्द सिंह के संदेश का सन्दर्भ लेखिका और रचना के पंजाबी संस्कृति से गहरे जुड़ाव का प्रमाण है।

कृष्णा सोबती ने 'ज़िन्दगीनामा' की संकल्पना पंजाब के सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास के रूप में की है। लेखिका ने इतिहास की व्याख्या दस्तावेजों के रूप में न करके, जन-सामान्य की सांस्कृतिक गतिविधियों द्वारा की है। कृष्णा सोबती का अपनी मातृभूति व संस्कृति से ऐसा गहरा लगाव है, जो उपन्यास के आरंभ में कविता बनकर फूट पड़ा है। उपन्यास के आरंभिक अट्ठाइस पृष्ठ कथा से अलग पंजाब का अत्यंत उदात्त और काव्यात्मक रेखाचित्र प्रस्तुत करते हैं।

उपन्यास में लेखिका के जन्मस्थान अविभाजित पंजाब के अब पाकिस्तान में रह गए ज़िला गुजरात की कथा बयान की गई है। उपन्यास में कथा तो कम है, दृश्यों का एक सतत् क्रम है। लेखिका ने डेरा जट्टा गाँव की यादों को एक संश्लिष्ट दृश्य में बाँधकर प्रस्तुत किया है।

उपन्यास का आरंभ शरद् पूर्णिमा की रात के खूबसूरत चित्रण से होता है। उसके बाद तो पंजाबी गाँवों में बसे तीनों समुदायों - हिंदू, मुसलमान व सिखों की घी-खिचड़ी ज़िन्दगी के अनेक चित्र सांस्कृतिक बिंबों द्वारा प्रस्तुत हुए हैं, जिनमें 'त्रिंजन' भी है, लोहड़ी भी, प्रेम कथाएँ भी, ईद और दशहरा भी और पंजाबी का विशेष त्यौहार 'बैसाखी' भी। शाह जी के परिवार को कथा के केन्द्र में रखकर लेखिका ने अनेकानेक अन्य कहानियाँ भी उपन्यास के कलेवर में सँजो दी है।

'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास में डेरा जट्टां गाँव के जीवन का हर पहलू ज़ीवंत रूप में चित्रित है। उपन्यास के अंत तक देश के स्वतंत्रता संग्राम की गूँज भी सुनाई देने लगती है। भगत सिंह के चाचा अजीत सिंह, क्रांतिकारी कवि लालचंद 'फलक' और गदर (1914) के चर्चे उपन्यास के अंत तक शुरू हो जाते हैं। 'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास में वर्णित जीवन का कालखण्ड 1910 से 1915 के बीच का जान पड़ता है।

'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास एक सांस्कृतिक-ऐतिहासिक औपन्यासिक रचना है। इसमें व्यक्ति-कथा कम, संस्कृति-कथा अधिक चित्रित हुई है। हालांकि इस संस्कृति कथा को बयान करने में लेखिका ने पंजाबी प्रभाव युक्त जिस भाषा का प्रयोग किया है, उससे रेणु के 'मैला आँचल' की भाषा की तरह कुछ पाठकों के लिए संप्रेषण बाधा आई है, लेकिन सांस्कृतिक परिवेश की रचना की भाषा इसी रूप में सौन्दर्य सृजित कर सकती थी।

'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास के विभिन्न पक्षों पर अगले पाठों में विस्तार से विचार किया जाएगा। अभी तो आपको इस उपन्यास को पढ़कर इसके सांस्कृतिक सौन्दर्य-बोध को ग्रहण करना है।

5.5 सारांश

'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास की प्रथम इकाई का अध्ययन आपने किया। इस इकाई में आपने मुख्य रूप से हिन्दी उपन्यास के विकास के संदर्भ में 'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास के महत्व को समझा। उपन्यास की लेखिका कृष्णा सोबती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की अद्यतन जानकारी प्राप्त की। उनकी रचनाओं में उपन्यास साहित्य का महत्व सर्वाधिक है, अत: एक प्रमुख उपन्यासकार रूप में लेखिका की प्रतिष्ठा से साक्षात्कार किया। लेखिका की सभी औपन्यासिक रचनाओं का उनके महत्व के साथ संक्षिप्त परिचय प्राप्त किया। कृष्णा सोबती के उपन्यास लेखन की यह प्रमुख विशेषता है कि उन्होंने किसी भी रचना में खुद को दोहराया नहीं है और उनकी प्रत्येक औपन्यासिक रचना एक नए और अनूठे विषय को प्रस्तुत करने वाली सफल रचना है। इससे उनकी प्रतिष्ठा हिन्दी की एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपन्यास लेखिका के रूप में स्थापित हुई है।

'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास की यहाँ सिर्फ पूर्व-पीठिका ही प्रस्तुत की गई है, क्योंकि इस उपन्यास के विभिन्न पक्षों पर अगली इकाइयों में विस्तार से विचार किया जाएगा। इतना तो स्पष्ट है कि 'ज़िन्दगीनामा' विभाजनपूर्व पंजाब का अत्यंत जीवंत सांस्कृतिक चित्र प्रस्तुत करने वाला

लेखिका का ही नहीं, हिन्दी का भी अत्यंत महत्वपूर्ण उपन्यास है। पंजाब की संस्कृति के सौन्दर्यमूलक चित्रण ने 'ज़िन्दगीनामा' को एक विशिष्ट उपन्यास का स्वरूप प्रदान कर दिया है।

5.6 अभ्यास प्रश्न

1. हिन्दी उपन्यास के विकासक्रम में 'ज़िन्दगीनामा' के महत्व को रेखांकित कीजिए।
2. कृष्णा सोबती की प्रमुख औपन्यासिक रचनाओं का परिचय दीजिए।
3. कृष्णा सोबती की रचनाओं में लंबी कहानी या लघु उपन्यास संबंधी चर्चा पर विचार कीजिए।
4. 'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास का परिचय दीजिए।
5. उपन्यासकार रूप में कृष्णा सोबती की प्रमुख विशेषताएँ रेखांकित कीजिए।